

लोकोक्तियाँ :-

लोकोक्ति शब्द दो शब्दों के मेल से बना है: '**लोक**' (यानी लोग, समाज) और '**उक्ति**' (यानी कथन या बात)।

समाज में **लंबे समय से** (चिरकाल) चली आ रही और **प्रचलित** किसी ऐसी बात या कथन को लोकोक्ति कहते हैं, जो किसी **घटित घटना** या **अनुभव** पर आधारित होती है और अपने आप में एक **पूर्ण वाक्य** होती है।

इसे '**कहावत**' नाम से भी जाना जाता है।

सरल विवरण और विशेषताएँ :-

1. **अनुभव का सार:** लोकोक्ति समाज के पुराने **अनुभवों का निचोड़** होती है। यह जीवन के किसी सत्य या व्यवहारिक ज्ञान को दर्शाती है।
2. **पूर्णता:** लोकोक्ति अपने आप में **पूर्ण और स्वतंत्र** होती है। इसे समझने के लिए किसी और बात की ज़रूरत नहीं होती। जैसे: "*जिसकी लाठी उसकी भैंस।*" (यह एक पूर्ण वाक्य है)।
3. **संबंध:** इसका संबंध किसी **वास्तविक घटना** या **सामाजिक स्थिति** से होता है, जिसके कारण यह बनती है और प्रचलित होती है।
4. **प्रभाव:** लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा **बहुत अधिक प्रभावशाली** और जीवंत बन जाती है, क्योंकि यह कम शब्दों में एक बड़ा अर्थ समझा देती है।
5. **परिवर्तन नहीं:** वाक्य में इस्तेमाल होने पर भी लोकोक्ति के शब्दों में **कोई बदलाव नहीं** आता है (जैसे लिंग, वचन या काल के अनुसार)।
6. **मुहावरे से अंतर:** मुहावरा एक **वाक्यांश** होता है (जैसे 'नौ दो ग्यारह होना'), जबकि लोकोक्ति अपने आप में एक **पूरा वाक्य** होती है। लोकोक्तियाँ समाज के भाषायी इतिहास और अनुभव को व्यक्त करती हैं।

लोकोक्ति	अर्थ
अंधा क्या चाहे दो आँखें।	इच्छित वस्तु की प्राप्ति।
अंधेर नगरी चौपट राजा।	अयोग्य प्रशासन
अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय।	अधिकार मिलने पर स्वार्थी व्यक्ति अपने लोगों की ही मदद करता है।
अंधे के हाथ बटेर लगना।	बिना परिश्रम के अयोग्य व्यक्ति को सुफल की प्राप्ति।
अंधों में काना राजा।	मूर्खा के बीच अल्पज्ञ भी बुद्धिमान माना जाता है।
अधजल गगरी छलकत जाय।	अल्पज्ञ अपने ज्ञान पर अधिक इतराता है।
अपनी करनी पार उतरनी।	मनुष्य को स्वयं के कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।	अकेला आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता है।
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।	हानि हो जाने के बाद पछताना व्यर्थ है।
अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई।	परिश्रम कोई करे फल किसी अन्य को मिले।
अंधे के आगे रोना, अपना दीदा खोना।	सहानुभूतिहीन या मूर्ख व्यक्ति के सामने अपना दुखड़ा रोना व्यर्थ है।
अक्ल बड़ी या भैंस	शारीरिक बल की अपेक्षा बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है।
अटका बनिया देय उधार।	मजबूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है।

लोकोक्ति	अर्थ
अपना रख पराया चख ।	स्वयं के पास होने पर भी किसी अन्य की वस्तु का उपभोग करना।
अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग।	तालमेल न होना।
अरहर की टट्टी गुजराती ताला।	बेमेल प्रबंध, सामान्य चीजोंकी सुरक्षा में अत्यधिक खर्च करना।
अपना हाथ जगन्नाथ।	अपना कार्य स्वयं करना ही उपयुक्त रहता है।
आँख का अंधा, गाँठ का पूरा।	बुद्धिहीन किंतु संपन्न।
आँख बची और माल यारों का।	ध्यान हटते ही चोरी हो सकती है।
आधी छोड़ पूरे ध्यावे, आधी मिले न पूरे पावै।	अधिक के लोभ में उपलब्ध वस्तु या लाभ को भी खो बैठना।
आम के आम गुठलियों के दाम।	दुगुना लाभ।
आए थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास।	बड़े उद्देश्य को लेकर कार्य प्रारंभ करना किंतु छोटे कार्य में लग जाना।
आगे कुआँ पीछे खाई।	सब ओर कष्ट ही कष्ट होना।
आ बैल मुझे मार।	जान-बूझकर विपत्ति मोल लेना।
आगे नाथ न पीछे पगहा।	पूर्णतः बंधन रहित/बेसहारा।
आठ वार नौ त्योहार।	मौजमस्ती से जीवन बिताना।

लोकोक्ति	अर्थ
आप भले तो जग भला ।	स्वयं भले होने पर आपको भले लोग ही मिलते हैं।
आसमान से गिरा, खजूर में अटका ।	काम पूरा होते-होते व्यवधान आ जाना।
आठ कनौजिये नौ चूल्हे ।	अलगाव या फूट होना।
इन तिलों में तेल नहीं ।	कुछ मिलने या मदद की उम्मीद न होना।
इधर कुआँ उधर खाई ।	सब ओर संकट।
उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना ।	थोड़ी सी मदद पाकर अधिकार जमाने की कोशिश करना।
उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई ।	एक बार इज्जत जाने पर व्यक्ति निर्लज्ज हो जाता है।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ।	दोषी व्यक्ति द्वारा निर्दोष पर दोषारोपण करना।
उल्टे बाँस बरेली को ।	विपरीत कार्य करना।
ऊँट के मुँह में जीरा ।	आवश्यकता अधिक आपूर्ति कम।
ऊँची दुकान फीका पकवान ।	मात्र दिखावा।
ऊँट किस करवट बैठा है ।	परिणाम किसके पक्ष में होता है अनिश्चित परिणाम।
ऊधो का लेना न माधो का देना ।	किसी से कोई लेना-देना न होना।
उधार का खाना फूस का तापना ।	बिना परिश्रम दूसरों के सहारे जीने का निरर्थक प्रयास करना।
ऊधो की पगड़ी, माधो का सिर ।	किसी एक का दोष दूसरे पर मढ़ना।

लोकोक्ति	अर्थ
एक अनार सौ बीमार।	वस्तु अल्प चाह अधिक लोगों की।
एक तो करेला दूसरा नीम चढ़ा।	एकाधिक दोष होना
एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा करती है।	एक व्यक्ति की बुराई से पूरे परिवार/समूह की बदनामी होना।
एक तो चोरी दूसरे सीना-जोरी।	अपराध करके रौब जमाना।
एक म्याँन में दो तलवारें नहीं समा सकती।	दो समान अधिकार वाले व्यक्ति एक साथ कार्य नहीं कर सकते।
एकै साधे सब सधै, सब साधे जब जाय।	एक समय में एक ही कार्य करना फलदायी होता है।
एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना।	समान दुर्गुण वाले एकाधिक व्यक्ति।
एक पंथ दो काज।	एक कार्य से दोहरा लाभ।
एक हाथ से ताली नहीं बजती।	केवल एक पक्षीय सक्रियता से काम नहीं होता।
ओछे की प्रीत बालू की भीत।	ओछे व्यक्ति की मित्रता क्षणिक होती है।
ओस चाटे प्यास नहीं बुझती।	अल्प साधनों से आवश्यकता या कार्य पूरा नहीं हो पाता है।
ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर।	कठिन कार्य का जिम्मा लेने पर कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए।
कंगाली में आटा गीला।	संकट में एक और संकट आना।

लोकोक्ति	अर्थ
कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर।	परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं।
करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।	अभ्यास द्वारा जड़ बुद्धि वाले व्यक्ति भी बुद्धिमान हो सकता है।
करे कोई भरे कोई।	किसी अन्य की करनी का फल भोगना।
कहीं की हंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा।	बेमेल वस्तुओं के योग से सब कुछ बनाना।
कौवों के कोसे ढोर नहीं मरते।	बुरे आदमी के बुरा कहने से अच्छे आदमी की बुराई नहीं होती।
काला अक्षर भैंस बराबर।	अनपढ़ होना/निरक्षर होना।
कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है।	अपनी वस्तु की सभी प्रशंसा करते हैं।
कोयले की दलाली में हाथ काला।	कुसंग का बुरा प्रभाव पड़ता ही है।
कौआ चले हंस की चाल।	किसी और का अनुसरण कर अपनापन खोना
काबुल में क्या गधे नहीं होते।	मूर्ख सभी जगह मिलते हैं।
कभी घी घना तो कभी मुट्टी चना।	परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, सदैव एक-सी नहीं रहती।
खग ही जाने खग की भाषा।	अपने लोग ही अपने लोगों की भाषा समझते हैं।
खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है।	देखा-देखी परिवर्तन आना।

लोकोक्ति	अर्थ
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।	असफलता से लज्जित व्यक्ति दूसरों पर क्रोध करता है।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया।	अधिक परिश्रम पर अल्प लाभ।
खुदा की लाठी में आवाज नहीं होती।	ईश्वर किसे, कब, क्या सजा देगा उसे कोई नहीं जानता।
खुदा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।	ईश्वर की कृपा से व्यक्ति कभी भी मालामाल हो जाता है।
गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास	सिद्धांतहीन अवसरवादी व्यक्ति।
गरीब की जोरु सबकी भाभी।	कमजोर आदमी पर सभी रोब जमाते हैं।
गुड़ दिए मरे तो जहर क्यों दे।	जब प्रेम से कार्य हो जाए तो क्रोध क्यों कीजिए।
गुड़ न दे, पर गुड़ की सी बात तो करे।	कुछ अच्छा दे न दे पर अच्छी बात तो करे।
गुरु जी गुड़ ही रहे, चले शक्कर हो गए।	छोटे व्यक्ति का अपने बड़ों से आगे निकलना।
गोद में छोरा (लड़का) शहर में ढिंढोरा।	पास रखी वस्तु को दूर-दूर तक खोजना।
घड़ी में तोला घड़ी में मासा।	अस्थिर मनोवृत्ति।
घर का भेदी लंका ढाए।	आपसी फूट का बुरा परिणाम होना।
घर की मुर्गी दाल बराबर।	अपनी वस्तु की कद्र न करना।
घर खीर तो बाहर खीर।	अपने पास कुछ होने पर ही बाहर भी सम्मान मिलता है।
घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने।	झूठा दिखावा करना।

लोकोक्ति	अर्थ
घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या।	मजदूरी लेने में संकोच कैसा
घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध।	बाहरी व्यक्ति को अधिक सम्मान देना।
चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भर न काठ।	श्रेष्ठ वस्तु थोड़ी मात्रा में होने पर भी अच्छी लगती है।
चट मंगनी पट ब्याह।	तुरंत कार्य संपादित करना।
चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय।	अत्यधिक कंजूस।
चाँद को भी ग्रहण लगता है।	भले आदमियों को भी कष्ट सहने पड़ते हैं।
चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात।	अल्पकालीन सुख।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता।	निर्लज्ज व्यक्ति पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता है।
चोरी का माल मोरी में।	बुरी कमाई का बुरे कार्यों में खर्च होना।
चोर-चोर मौसेरे भाई।	दुष्ट लोगों में मित्रता होना।
चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाता।	अल्प साधनों से बड़ा काम संभव नहीं होता।
चोर को कहे चोरी कर, साहूकार को कहे जागते रहो	दो पक्षों को आपस में भिड़ाना।
चोर की दाढ़ी में तिनका।	दोषी अपने दोष का संकेत दे देता है।

लोकोक्ति	अर्थ
छछूदर के सिर में चमेली का तेल।	कुपात्र द्वारा श्रेष्ठ वस्तु का भोग करना।
छोटा मुँह बड़ी बात।	सामर्थ्य से अधिक डींग हाँकना।
छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सुभानल्लाह।	छोटे की तुलना में बड़े में ज्यादा अवगुण होना।
जंगल में मोर नाचा किसने देखा।	गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थल पर ही करना चाहिए।
जब तक जीना तब तक सीना।	जीवन पर्यन्त व्यक्ति को काम धंधा करना होता है।
जब तक साँस तब तक आस।	अंतिम समय तक आशा बनी रहना।
जल में रहकर मगर से बैर।	साथ रहकर दुश्मनी ठीक नहीं।
जहाँ गुड़ होगा, वहाँ मक्खियाँ होंगी।	जहाँ आकर्षण होगा वहाँ लोग एकत्र होते ही हैं।
जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।	कवि की कल्पना का विस्तार सभी जगहों तक होता है।
जहाँ मुर्गा नहीं होता, क्या वहाँ सवेरा नहीं होता।	संसार में किसी के अभाव में कोई कार्य नहीं रुकता।
जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।	कठिन परिश्रम से ही सफलता संभव होती है।
जिस थाली में खाना उसी में छेद करना।	उपकार करने वाले व्यक्ति का अहित सोचना।
जिसकी लाठी उसकी भैंस।	शक्तिशाली की विजय होती है।

लोकोक्ति	अर्थ
जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।	जिसने कभी दुख न भोगा हो, वह दूसरों की पीड़ा नहीं जान सकता।
जीती मक्खी नहीं निगली जाती।	जानते हुए गलत को नहीं स्वीकारा जा सकता।
जो गुड़ खाये सो कान छिदाए।	लाभ के लालच के कारण कष्ट सहना पड़ता है।
झूठ के पैर नहीं होते।	झूठ ज्यादा टिकाऊ नहीं होता।
झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी।	जल्दबाजी में किया गया काम बेकार होता है।
झोंपड़ी में रहकर महलों के ख्याब।	सामर्थ्य से अधिक चाहना।
टेढ़ी उँगली किए बिना घी नहीं निकलता।	सीधेपन से काम नहीं चलता।
टके की हांडी गई पर कुत्ते की जात पहचान ली।	थोड़ी सी हानि के द्वारा धोखेबाज को पहचानना।
ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है।	शांत व्यक्ति क्रोधी व्यक्ति पर भारी पड़ता है।
ठोकर लगे पहाड़ की तोड़े घर की सील।	बाहर के बलवान व्यक्ति से चोट खाने का गुस्सा घर के लोगों पर निकालना।
डूबते को तिनके का सहारा।	संकट के समय में थोड़ी सी सहायता भी लाभप्रद होती है।
ढाक के तीन पात।	सदा एक सी स्थिति।

लोकोक्ति	अर्थ
ढोल के भीतर पोल।	दिखावटी वैभव या शान।
तीन लोक से मथुरा न्यारी।	सबसे अलग विचार रखना।
तू डाल-डाल मैं पात-पात।	एक से बढ़कर दूसरा चालाक होना।
तेल देखो तेल की धार देखो।	कार्य होने व उसके परिणाम की प्रतीक्षा करना।
तेली का तेल जले मशालची का दिल जले।	खर्च कोई करे, परेशान कोई और हो।
तेते पाँव पसारिये, जेती लंबी सौर।	सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना।
तन पर नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता।	अभावों में भी झूठी शान का प्रदर्शन।
तबेले की बला बंदर के सिर।	किसी का दोष किसी दूसरे पर मढ़ना।
तेली के बैल को घर ही पचास कोस।	घर में ही कार्य की अधिकता होना।
थका ऊँट सराय ताकता।	थकने पर सभी को विश्राम चाहिए।
थोथा चना बाजे घना।	अल्पज्ञानी व्यक्ति अधिक डींगें हाँकता है।
दबी बिल्ली चूहों से कान कतराती है।	दोषी व्यक्ति अपने से कमजोर के आगे भी झुकता है।
दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते।	मुफ्त में मिली वस्तु के गुण-दोष नहीं देखे जाते।
दाल-भात में मूसलचंद।	अनावश्यक दखल देने वाला।

लोकोक्ति	अर्थ
दिल्ली अभी दूर है।	सफलता अभी दूर है।
दुधारु गाय की लात भी सहनी पड़ती है।	जिस व्यक्ति से लाभ हो उसका गुस्सा भी सहना पड़ता है।
दुविधा में दोने गए माया मिली न राम।	दुविधाग्रस्त स्थिति में कुछ भी फल लाभ संभव नहीं होता।
दूर के ढोल सुहावने होते हैं।	दूर से वस्तुएँ अच्छी लगती हैं।
देसी कुतिया, विलायती बोली।	किस अन्य की नकल करना।
दूध का जला, छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है।	एक बार ठोकर खाया व्यक्ति आगे विशेष सावधानी बरतता है।
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।	दो पक्षों से जुड़ा व्यक्ति कहीं का नहीं रहता।
धोबिन पर बस न चला तो गधे के कान उमठे।	सामर्थ्यवान पर बस न चलने पर कमजोर पर रौब जमाना।
धोबी रोवे धुलाई को, मियाँ रोवे कपड़े को।	अपने-अपने नुकसान की चिंता करना।
धन का धन गया, मीत की मीत गई।	उधार के कारण धन व मित्रता दोनों नहीं रहते।
न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।	अनहोनी शर्त रखना।
नक्कारखाने में तूती की आवाज।	बड़ों के बीच छोटे आदमी की बात कोई नहीं सुनता है।
न सावन सूखीं न भादों हरी।	सदैव एकसी स्थिति।

लोकोक्ति	अर्थ
न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।	झगड़े के कारण को समाप्त करना।
नाच न जाने आँगन टेढ़ा।	स्वयं के दोष छिपाने हेतु दूसरों में कमियाँ ढूँढना।
नेकी कर कुए में डाल।	भलाई करके भूल जाना।
नेकी और पूछ-पूछ।	अच्छे कार्य के लिए किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं होती।
नीम हकीम खतरे जान।	अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है।
नौ नकद तेरह उधार।	भविष्य में बड़े लाभ की आशा की अपेक्षा आज होनेवाला छोटा काम बेहतर होता है।
नौ दिन चले अढ़ाई कोस।	अधिक समय में थोड़ा काम।
नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज की चली।	बड़ा पाप करने के बाद पुण्य का ढोंग करना।
न ऊधौ का लेना न माधो का देना।	किसी से कोई मतलब न होना।
नमाज छोड़ने गए रोजे गले पड़े।	छोटे कार्य से मुक्ति के प्रयास में बड़े कार्य का जिम्मा गले पड़ना।
नानी के आगे ननिहाल की बातें।	जानकार को जानकारी देना।
नाई की बरात में सब ठाकुर ही ठाकुर।	सभी बड़े बन बैठते हैं तो काम नहीं हो पाता है।
नाम बड़े और दर्शन छोटे।	प्रसिद्धि अधिक किंतु गुण कम।
पढ़े तो हैं किंतु गुने नहीं।	शिक्षित किंतु अनुभवहीन।

लोकोक्ति	अर्थ
पराया घर थूकने का भी डर।	दूसरों के घर हर बात का संकोच रहता है।
पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती।	सब लोग एक से नहीं होते।
पराधीन सपनेहुँ सुख नहीं।	पराधीनता में सुख नहीं होता।
प्यादे से फरजी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाय।	छोटा आदमी बड़ा पद पाकर इतराता है।
फटा दूध और फटा मन फिर नहीं मिलता।	एक बार मतभेद होने पर पुनः पहले-सा मेल नहीं होता।
फरा सो झरा, बरा सो बुताना।	जो फला है वह झड़ेगा और जला हुआ भी बुझेगा (सभी का अंत निश्चित है)।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे।	दूसरों को उपदेश देने में सब चतुर होते हैं।
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।	मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तु की महत्ता नहीं जानता है।
बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी।	जिसे कष्ट पाना है वह ज्यादा समय तक नहीं बच सकता।
बासी बचे न कुत्ता खाय।	जरूरत अनुसार कार्य करना।
बिल्ली के भाग से छींका टूटना।	बिना प्रयास अयोग्य व्यक्ति को श्रेष्ठ वस्तु मिलना।
बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय।	बुरे काम का अच्छा परिणाम संभव नहीं।
बैठे से बेगार भली।	फालतू या बेकार बैठने की अपेक्षा सामान्य (कम लाभ) कार्य करना भी बेहतर होता है।

लोकोक्ति	अर्थ
बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं।	एक न एक दिन सभी के जीवन में अच्छे दिन आते हैं।
बाप भला न भइया, सबसे बड़ा रुपइया।	रिश्तों की अपेक्षा पैसों को अहमियत देना।
बाप ने मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज।	परिवार के मुखिया के अयोग्य होने पर भी संतान का योग्य होना।
बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले।	योग्यता के अभाव में भी कठिन कार्य का जिम्मा लेना।
भेड़ की लात घुटने तक।	कमजोर व्यक्ति किसी का अधिक नुकसान नहीं कर सकता।
भागते भूत की लंगोटी ही सही।	जिनसे कुछ मिलने की अपेक्षा न हो उससे थोड़ा भी मिल जाए तो बेहतर।
भूखे भजन न होय गोपाला।	भूख के समय दूसरा कुछ ठीक नहीं लगता।
भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय।	मूर्ख के सम्मुख ज्ञान की बातें करना व्यर्थ है।
मन चंगा तो कठौती में गंगा।	मन की पवित्रता महत्वपूर्ण है।
मरता क्या न करता।	मुसीबत में व्यक्ति गलत कार्य भी करता है।
मान न मान मैं तेरा मेहमान।	जबरदस्ती गले पड़ना।
मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी।	दो लोगों में आपसी प्रेम है तो तीसरा रोक भी नहीं सकता।

लोकोक्ति	अर्थ
मुख में राम, बगल में छुरी।	मित्रता का दिखावा कर मन में धूर्तता रखना।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।	उत्साह से ही सफलता संभव होती है।
मेरी बिल्ली मुझ से ही म्याऊँ।	आश्रयदाता पर रौब जमाना।
मन के लड्डुओं से पेट नहीं भरता।	केवल कल्पनाओं से तृप्ति संभव नहीं होती है।
मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।	सीमित सामर्थ्य होना।
मन भावै मूँड हिलावै।	मन से चाहना किंतु ऊपर से दिखावे के लिए मना करना।
मुँह माँगी मौत नहीं मिलती।	अपनी इच्छा से ही सब कुछ नहीं होता।
यह मुँह और मसूर की दाल।	हैसियत से बढ़कर बात करना।
यथा नाम तथा गुण।	नाम के अनुसार गुण होना।
यथा राजा तथा प्रजा।	जैसा स्वामी वैसा सेवक।
रस्सी जल गई पर बल न गया।	प्रतिष्ठा चले जाने पर भी घमंड बने रहना।
रोज कुआँ खोदना, रोज पानी पीना।	प्रतिदिन कमाकर जीवन यापन करना।
लकड़ी के बल बंदर नाचे।	भय के कारण काम करना।
लोहे को लोहा ही काटता है।	बुराई को बुराई से ही जीता जा सकता है।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते।	दुष्ट व्यक्ति भय से ही मानते हैं मात्र कहने से नहीं।

लोकोक्ति	अर्थ
लिखे ईसा पढ़े मूसा।	ऐसी लिखावट जिसे पढ़ा न जा सके।
बिनाशकाले विपरीत बुद्धि।	प्रतिकूल समय में विवेक भी जाता रहता है।
विधि का लिखा को मेटन हारा।	भाग्य का लिखा कोई बदल नहीं सकता।
साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।	बिना किसी नुकसान के कार्य पूर्ण करना।
साँप छँदर की गति होना।	दुविधा में होना।
सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखता है।	सुख-वैभव में पले व्यक्ति को दूसरों के कष्टों का अनुमान नहीं हो सकता।
सब धान बाईस पंसेरी।	अच्छे-बुरे की परख न कर सबको समान समझना।
समरथ को नहीं दोष गुसाईं।	सामर्थ्यवान् व्यक्ति को कोई भी कुछ नहीं कहता।
सड़ियाँ भए कोतवाल तो अब डर काहे का।	अपने व्यक्ति के बड़े पद पर होने पर लोग उसका अनुचित लाभ उठाते हैं।
सहज पके सो मीठा होय।	उचित प्रक्रिया से किया गया कार्य ही ठीक होता है।
हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा आ जाये।	बिना खर्च के कार्य का अच्छी तरह से संपादन करना।
हथेली पर सरसों नहीं उगती।	प्रत्येक कार्य पूर्ण होने में एक निश्चित समय लगता है।
हाथ कंगन को आरसी क्या।	प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

लोकोक्ति	अर्थ
हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और।	कपटपूर्ण व्यवहार या कथनी-करनी में अंतर होना।
होनहार बिरयान के होत चीकने पात।	महान व्यक्तियों के श्रेष्ठ गुणों के लक्षण बचपन से ही दिखाई पड़ने लगते हैं।
हाथ सुमरिनी बगल कतरनी।	छल-कपट का व्यवहार।

Important Questions :-

Q1. "अंधों में काना राजा" लोकोक्ति का सही अर्थ क्या है?

- (A) अंधों के बीच कोई राजा नहीं होता
- (B) मूर्खों के बीच थोड़ा ज्ञानी भी बुद्धिमान माना जाता है
- (C) ज्ञानी व्यक्ति की कोई कद्र नहीं होती
- (D) राजा सब पर हावी रहता है

उत्तर: (B) मूर्खों के बीच थोड़ा ज्ञानी भी बुद्धिमान माना जाता है

Q2. "अधजल गगरी छलकत जाय" लोकोक्ति किस व्यक्ति पर लागू होती है?

- (A) अत्यधिक विनम्र व्यक्ति पर
- (B) अल्पज्ञ व्यक्ति जो अपने ज्ञान पर इतराता है
- (C) बहुत ज्ञानी व्यक्ति पर
- (D) निर्धन व्यक्ति पर

उत्तर: (B) अल्पज्ञ व्यक्ति जो अपने ज्ञान पर इतराता है

Q3. "अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत" लोकोक्ति का अर्थ क्या है?

- (A) पहले से मेहनत करना चाहिए
- (B) कार्य में देर करना उचित नहीं है

(C) हानि के बाद पछताना व्यर्थ होता है

(D) भाग्य पर भरोसा करना चाहिए

उत्तर: (C) हानि के बाद पछताना व्यर्थ होता है

Q4. "घर का भेदी लंका ढाए" का तात्पर्य क्या है?

(A) घर का व्यक्ति ही सुख देता है

(B) अंदरूनी फूट से बड़ा नुकसान होता है

(C) घर में झगड़ा न होना चाहिए

(D) परायों पर विश्वास न करना चाहिए

उत्तर: (B) अंदरूनी फूट से बड़ा नुकसान होता है

Q5. "भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय" का सही भावार्थ क्या है?

(A) जानवरों को सिखाना असंभव है

(B) मूर्ख व्यक्ति के सामने ज्ञान की बातें व्यर्थ हैं

(C) पशुओं को संगीत पसंद नहीं

(D) व्यर्थ बातों में समय नष्ट न करो

उत्तर: (B) मूर्ख व्यक्ति के सामने ज्ञान की बातें व्यर्थ हैं

Q6. "नाच न जाने आँगन टेढ़ा" का प्रयोग कब किया जाता है?

(A) जब व्यक्ति अपने दोष दूसरों पर डालता है

(B) जब व्यक्ति बहुत नाचता है

(C) जब स्थान बहुत गंदा हो

(D) जब कोई व्यक्ति दूसरों की गलती बताता है

उत्तर: (A) जब व्यक्ति अपने दोष दूसरों पर डालता है

Q7. "साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे" लोकोक्ति का अर्थ क्या है?

(A) बिना किसी हानि के कार्य सिद्ध होना

(B) युद्ध में विजय प्राप्त करना

(C) हानि सहकर लाभ लेना

(D) कठिन कार्य में असफल होना

उत्तर: (A) बिना किसी हानि के कार्य सिद्ध होना

Q8. "ढाक के तीन पात" का प्रयोग किस अर्थ में किया जाता है?

(A) हर बार नई स्थिति बनना

(B) सदा एक जैसी स्थिति बने रहना

(C) समय-समय पर परिवर्तन होना

(D) प्रयास के बाद सफलता मिलना

उत्तर: (B) सदा एक जैसी स्थिति बने रहना

Q9. "तेते पाँव पसारिये, जेती लंबी सौर" लोकोक्ति का क्या संदेश है?

(A) ज्यादा खर्च करना चाहिए

(B) अपनी हैसियत से अधिक नहीं फैलना चाहिए

(C) दूसरों की मदद से काम चलाना चाहिए

(D) लालच रखना चाहिए

उत्तर: (B) अपनी हैसियत से अधिक नहीं फैलना चाहिए

Q10. "खोदा पहाड़ निकली चुहिया" लोकोक्ति का तात्पर्य क्या है?

(A) बहुत मेहनत से बड़ा लाभ

(B) अधिक परिश्रम पर अल्प लाभ

(C) बिना मेहनत के सफलता

(D) मेहनत व्यर्थ जाती है

उत्तर: (B) अधिक परिश्रम पर अल्प लाभ





👉 **Subscribe Youtube Channel** - [Anvira Education - YouTube](https://www.youtube.com/channel/UCviraeducation)

👉 **Join Course** - [Https://Anviraeducation.Com/](https://Anviraeducation.Com/)

👉 **Follow Us On Facebook** - [Https://www.facebook.com/Anviraedu](https://www.facebook.com/Anviraedu)

👉 **Follow Us On Instagram** - https://www.instagram.com/anvira_edu/

👉 **Sampat Sir Instagram** - <https://www.instagram.com/writersampat/>

👉 **Join Our Telegram Channel** - <https://t.me/Anviraeducation20>